Class → D.El.Ed : II Sem

Subject : S.S.T

Topic : 'वायुमण्डल'

पृथ्वी के चारों ओर वायु के आवरण को वायुमण्डल कहा जाता है। वायुमण्डल शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। वायु + मण्डल, अर्थात वायु का विशाल आवरण जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है। इसका न कोई रंग है, ना स्वाद है और ना ही गन्ध, किन्तु इसकी उपस्थिति का अनुभव इसके विभिन्न तत्वों द्वारा होता है।

फिंच व ट्रिवार्था के शब्दों में "वायुमण्डल विभिन्न गैसों का आवरण है, जो धरातल के सैकड़ों मील की ऊँचाई तक विस्तृत है तथा पृथ्वी का अभिन्न अंग है।"

वायुमण्डल की संरचना में गैसों का स्थान सर्वोपरी है। शुष्क वायु में प्रमुखतः नाइट्रोजन

Scanned with CamScanner

(78 %) आक्सीजन (21 %) तथा आर्गन, कार्बन डाई - आक्साइड व हाइड्रोजन आदि लगभग (1 %) जैसी भारी गैसे पाई जाती है। प्रायः धरातल के निकटवर्ती भागों मे भारी गैसे तथा ऊपरी भाग में नियोज, हीलियम व ओजोन जैसी कई हल्की गैसे होती है।

वायुमण्डल के सबसे निचले भाग में 20 किमी की ऊँचाई तक भारी गैसे व अन्य पदार्थ मिलते है। 100 किमी की ऊँचाई तक आक्सीजन व नाइट्रोजन गैस पाई जाती है। 125 किमी की ऊँचाई तक हाइड्रोजन गैस मिलती है।

Scanned with CamScanner